Living the Lotus

2

2021

VOL. 185

Buddhism in Everyday Life

Founder’s Reflections

जिज्ञासु मन

जब मैं बच्चा था, तब भी पीछे बैठकर लोगों को पीड़ित देखना मेरा स्वभाव नहीं था।

मुझे लगता है कि मेरे पिता और दादा के रहने का तरीका स्वाभावत: ही मुझमें आरोपित हो गया था। जब युवा हो गया, मैंने जो कुछ भी देखा या सुना, उसे अंगीकार किया और सोचा कि मैं भी लोगों की मदद करूँगा। आखिरकार, इसने मुझे पुण्डरीक सूत्र के साथ मिला दिया।

निचिरेन बौद्ध धर्म में मंत्र उच्चारण के लिए प्रारंभिक गाथा में यह पद आता है--

जो कुछ भी हमने देखा सुना,
स्पर्श किया और जाना है,
हमें बोधिज्ञान के करीब लाते हैं।

परन्तु लक्ष्यहीन जीवन का अनुभव मात्र आपको बोधिज्ञान के करीब नहीं लायेगा। इसके बजाय, आपको हर दिन एक परिभाषित लक्ष्य के साथ अपना जीवन यापन करते रहना है और सच्चे मन से सश्रम प्राप्त करना चाहिए। फिर आप एक के बाद एक समस्याओं के हल की गवेषणा उन सूत्रों में जिन्हें पढ़ रहे हैं, उनमें मिलनेवाले शब्दों में, और मिलनेवाली हर एक चीज में कर रहे हैं। मुझे लगता है कि यह एक चुंबक के आकर्षण के समान है और साधारण रेत से लौहकणों को खींच लेता है।

इसके विपरीत, जो लोग जीवन में कोई उच्च उद्देश्य नहीं रखते हैं, वे कुछ भी प्राप्त नहीं करते हैं, भले ही वे स्वयं को खजाने के पहाड़ से घिरा हुआ पाते हों।

निक्क्यो निवानो, काइसो जुइकान 10 (कोसेइ प्रकाशन, 1997), पीपी. 22-23

रिश्शो कोसेईकाई गृहस्थों की संस्था है जिसका पवित्र ग्रन्थ सद्धर्म पुण्डरीक सूत्र एवं अन्य दो लघु सूत्रों का संकलन है। इस संस्था को संस्थापक निक्क्यो निवानो एवं सह-संस्थापक म्योको नागानुमा ने सन् १९३८ ई० में स्थापित किया था। यह उन साधारण स्त्रियों एवं पुरुषों की संस्था है जिन्हें बुद्ध में श्रद्धाविश्वास है तथा जो बुद्ध के उपदेशों के अनुसार चलते हुए अपने आध्यत्मिक जीवन को समृद्ध बनाते हैं।

प्रेसिडेण्ट का दिशानिर्देश निचिको निवानो, के अन्तर्गत हम देश एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तरों पर अन्य संस्थाओं के साथ मिलकर शान्ति एव कल्याण के लिये तत्पर होकर परोपकार के कार्य में सलग्न हैं।

Living the Lotus
Vol. 185 (February 2021)

Senior Editor: Keiichi Akagawa
Editor: Kensuke Osada
Copy Editor: Parmita Shekhar

Living the Lotus is published monthly by Rissho Kosei-kai International, Fumon Media Center, 2-7-1 Wada, Suginami-ku, Tokyo 166-8537, Japan.
TEL: +81-3-5341-1124
FAX: +81-3-5341-1224
Email: living.the.lotus.rk-international @kosei-kai.or.jp

“लिविंग द लोटस्: बुद्धिज्म इन एवरीडे लाइफ” का उद्देश्य यह दर्शाना है कि जैसे सरोवर के कीचड़ से निकलकर कमल खिलता है वैसे ही पुण्डरीक सूत्र की शिक्षा का दैनिक जीवन में अनुशरण के प्रयास से हमारा जीवन समृद्ध बनता है, हमारा जीना सार्थक होता है। इसका संस्करण के माध्यम से दुनियाँ में लोगों के दैनिक जीवन में बौद्धधर्म की शिक्षा को सरल बोधगम्य बनाना है।

President's Message

लोग जो दूसरों को खुशी देते हैं

निचिको निवानो
प्रेसिडेण्ट, रिश्शो कोसेइ काइ

अलौकिक शक्तियाँ क्या हैं?

अलौकिक शक्ति मानव ज्ञान से परे का ज्ञान है, उसे अक्सर "पारलौकिक शक्ति" के रूप में जाना जाता हैं, और जिसे हम आमतौर पर एक विशेष क्षमता के रूप में सोचते हैं, जिसे हम स्वयं प्राप्त नहीं कर सकते हैं।

यह कोई आश्चर्य नहीं है कि हम ऐसा सोचते हैं, क्योंकि बौद्ध सूत्र कहता है कि अविश्वसनीय क्षमतायें, जैसेकि 'हर क्षेत्र के समस्त चीजों को देखने में क्षमता का होना' और 'लोकों को देदीप्यमान करनेवाली उज्ज्वल प्रकाश रश्मि का शरीर के हर छिद्र से उत्सर्जित करना,' अलौकिक शक्तियों के कारण हैं। हालाँकि, मुझे नहीं लगता कि शाक्यमुनि ने स्वयं ऐसा कुछ भी प्रदर्शित किया है, जो हम स्वयं नहीं कर सकते हैं। उस स्थिति में, सूत्रों में संदर्भित 'अलौकिक शक्तियों' का क्या अर्थ है?

मेरी समझ में, व्यक्ति की सबसे बड़ी अलौकिक शक्ति यह है कि हमारे पास मस्तिक है। दूसरे शब्दों में, मानव मन एक अलौकिक शक्ति है, क्योंकि हमें सोचने की शक्ति है, हम दूसरे लोगों की भावनाओं को समझ सकते हैं - हम समझ सकते हैं कि वे क्या चाहते हैं। क्योंकि हमारे पास मस्तिक है, हम शाक्यमुनि द्वारा प्रकाशित सत्य को समझने में सक्षम हैं।

संस्थापक निवानो ने कहा है कि यदि, सच्चे अर्थ में महायान की देशनाओं के माध्यम से आपको ज्ञान प्राप्त होता है, तो वह अलौकिक शक्ति प्राप्त करने के समान है। उनका आशय है कि यह मानने के बजाय कि अलौकिक शक्ति कुछ अविश्वसनीय क्षमता है, हमें यह कहना चाहिए कि मन की दैनिक कार्यप्रणाली एक ऐसी शक्ति का उत्पादन करती है जिसे अलौकिक कह सकते हैं, जब इसका प्रयोग दूसरों के प्रति सहानुभूति दिखाने के लिए होता है। उदाहरण के लिए, कई रिश्शो कोसेइ काइ के सदस्य कहते हैं कि उन मित्रों के समर्थन के लिए धन्यवाद, जो बुद्ध की देशना को जानते हैं और कहते हैं कि उनके करीब आ गए हैं और इस जन्म में ही उनका यह नया जन्म है। असल में, कभी-कभी हम मस्तिष्क के इन परिवर्तनों के लिए केवल 'अद्‌भुत' शब्द का उपयोग कर सकते हैं - यह हमें दिखाता है कि हमारा मस्तिष्क कुछ भी करने में सक्षम है।

एक निर्दयी हत्यारे अंगुलिमाल की कहानी से साबित होता है, जो शाक्यमुनि की देखभाल और मार्गदर्शन से, उनके अग्रणी शिष्यों में एक बन गया। तो, मन के एक हिस्से में अलौकिक शक्ति के रूप मे हमारी सच्चाई है, जो अन्य लोगों के बारे में सोचता है, और उस हिस्से से निकली शक्ति भी कार्य करती है।

खुशी दूसरों के लिए खुशी लाने में है

एक बार जब मैं अलौकिक शक्तियों के बारे में बात कर रहा था, किसी ने कहा, “कोसेइ-काइ उन लोगों से भरा है, जो सच्चाई से अलौकिक शक्ति का प्रदर्शन करते हैं,” और मुझे निश्चित रूप से विश्वास है कि यह सच है। ऐसा इसलिए है, क्योंकि पुण्डरीक सूत्र, परिवर्त-21. तथागत की अलौकिक शक्तियों के अनुसार लोगों को हर्षित करने के लिए अलौकिक शक्तियों का उपयोग किया जाता है। इस परिवर्त से उद्धृत कर बुद्ध ने दिखलाया है कि

जीवित प्राणियों में खुशी लाने के लिए,
असीम पारलौकिक शक्तियों का प्रदर्शन किया।

इसलिए, दूसरों के साथ खुशी से, विनम्रता और गर्मजोशी से बातचीत करना और उनकी देखभाल के लिए हर संभव प्रयास करना आवश्यक है। यदि आप उनके लिए अपने विचार पर अमल करते हुए उन्हें थोड़ी सी खुशी भी देते हैं, तो यह आपकी अलौकिक शक्ति के प्रदर्शन के अलावा और कोई नहीं है।

संयोग से, मंगा कलाकार ताकाशी यानासे (1919-2013), जिन्हें अन्पान्मान श्रृंखला के निर्माता के रूप में जाना जाता था, उन्होंने अपनी पुस्तक मो हितोत्सु नो अन्पान्मान मोनोगातारी में लिखा है [अन्पान्मान की एक और कहानी है] कि सबसे बड़ा आनंद / दूसरों को ला रहा है आनंद।

उन्होंने इस पर विस्तार से यह कहा कि लोग सबसे ज्यादा खुश होते हैं जब वे दूसरों को खुश करते हैं, अर्थात् जीवन में सबसे बड़ा आनन्द, लोगों को आनन्दित करना है, और वे एक मंगा (हास्य) कलाकार बन गये क्योंकि वे लोगों को खुश करने के लिए अपना सब कुछ देना चाहते थे। जब मैंने इसे पढ़ा, तो मुझे लगा कि वे एक बोधिसत्व थे, जिन्होंने अपने मंगा के माध्यम से लोगों को खुशी दी और साथ ही, हमें सिखाया कि यदि हम जीवन के एक ऐसे तरीके के लिए समर्पित हैं, जो दूसरों को खुश करता है, तो हम सभी बोधिसत्व बन सकते हैं, जहाँ कहीं हम हैं।

यहाँ तक कि कोई जो खाट से उठ नहीं पा रहा है, वह मुस्कुराकर और कृतज्ञता के शब्दों को कहकर दूसरों को खुशी दे सकता है — यह भी अलौकिक शक्ति है और बोधिसत्व का काम है।

परिवर्त- 21 के अंतिम गाथा के अनुसार, जो लोग इस तरह से धर्म का साझा करते हैं--

अगण्य बोधिसत्वों के कारण होंगे,
वे एकयान में अंतत: अवस्थित होंगे।

हम में से हरेक ऐसी समाज का निर्माण कर रहे हैं, जिसमें हर कोई सद्भाव के साथ रह सके। मुझे आशा है कि रिश्शो कोसेइ काइ सदा ऐसे लोगों से भरा होगा, जो हर समय हार्दिक सच्चाई के साथ, दूसरों को खुशी देकर खुश रहते हैं।

From *Kosei*, February 2021.

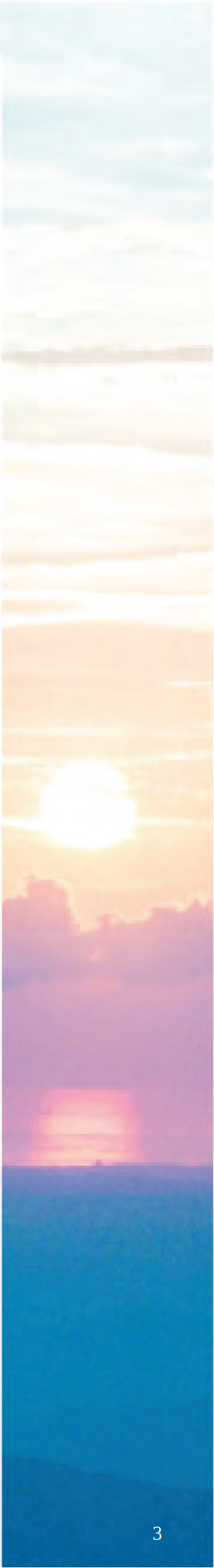

समेकित त्रिविध पुण्डरीक सूत्रः
प्रत्येक अध्याय का सारांश एवं मुख्य बिन्दुयें

निक्कयो निवानो

सद्धर्मपुण्डरीकसूत्र
परिवर्त-22 अनुपरीन्दना

सुपुर्द किये जाने और कठिन कार्य का सामना करने का आनन्द

इस परिवर्त में, शाक्यमुनि ने सभी बोधिसत्वों के मस्तक पर अपना हाथ रखा और उन्हें आने वाले युगों में लोगों में बोधिज्ञान के कोष को एकल मन से प्रसारित करने के महान कार्य को सौंप दिया, उन्हें धर्म के एकल मन से प्रचार प्रसार का और उन्हें दूर तक बहुविध लाभ पहुँचाने का आह्वान किया। इसे प्राचीन काल से "सामान्य सुपुर्द करना" कहा जाता है।

प्रतिक्रिया में, बोधिसत्व हार्दिक आनन्द भर गये और जब वे सानन्द कठिन कार्य को आगे बढ़ाते हैं, अपने दृढ़ संकल्प की तीन बार घोषणा करते हैं। हमें इसे अच्छी तरह से मन में रखना चाहिए, क्योंकि यह इस परिवर्त का प्रमुख बिंदु है: बाद के दिनों में हम बोधिसत्वों को इस आनन्द को ध्यान में रखना और इस कठिन कार्य को करने के लिए चेहरे की खुशी को याद रखना चाहिए।

एक बार पुन: गृध्रकूट का समागम

इस परिवर्त के साथ, पुण्डरीक सूत्र में बुद्ध की देशना के एक प्रमुख चरण पूरा हुआ। इस परिवर्त के समाप्त होने के साथ, सूत्र का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा, जो बुद्ध के शाश्वत जीवन का और इसमें विश्वास करने के गुणों का वर्णन करता है और उसका निष्कर्ष भी दिया है। पुण्डरीक सूत्र के इस भाग पर एक पर्दा खींचा गया है, जिसमें एक रमणीय दृश्य (आकाश) के मंच पर खेला गया है, और कहानी एक बार फिर से वास्तविक (गृध्रकूट) के दृश्य पर लौटती है।

सद्धर्मपुण्डरीकसूत्र
परिवर्त-23. बोधिसत्व भैषज्यपूर्वयोग

बोधिसत्व जीवित प्राणियों के लिए मॉडल हैं

अब तक की देशना ने सत्य को स्पष्ट किया है; अब हम वास्तविक अभ्यास के विषय पर आते हैं। सामान्य व्यक्ति के लिए यह जानना विशेष रूप से कठिन है कि एक उदात्त सत्य के साथ हर दिन के कार्यक्रम का संचालन को पूर्ण कोई कैसे कर पायेगा। ऐसा करने का इससे अच्छा तरीका कोई नहीं है कि हम बोधिसत्वों के उदाहरणों का पालन करें, जो बुद्धों से एक कदम दूर हैं और जो विशेष रूप से पुण्य या अनुकरणीय कार्य के लिए मान्य हैं।

जीवित प्राणियों को उनके करीबी मॉडल द्वारा सही कार्रवाई के लिए प्रोत्साहित किया जाता है, और यह अनिवार्य रूप से इन मॉडलों या उदाहरणों की प्रस्तुतियाँ हैं।

समर्पित अभ्यास सर्वोच्च अर्पण है

इस परिवर्त में जिनका वृतान्त प्रथम प्रदर्शित हुआ है, वे बोधिसत्व भैषज्यराज हैं, जिन्होंने मानव जाति की बीमारियों को ठीक करने का व्रत्त लिया है। बुद्ध और उनके धर्म के पालन के पुण्य के प्रतिफल को दिखाने के लिए पूर्वजन्म में बोधिसत्व के समर्पण और पूर्व जीवन में उनके त्याग का वर्णन किया गया है।

अपने पूर्व जीवन में, भैषज्यराज बोधिसत्व थे, जिनका नाम बोधिसत्व सर्वसत्त्वप्रियदर्शन था। सूर्यचंद्रविमलप्रभास बुद्ध की सेवा में, उन्होंने धर्म पुण्डरीक सूत्र का सत्य सुना। बारह हजार वर्षों के कठोर अभ्यास से उन्होंने किसी भी भौतिक रूप में प्रकट होने की समाधि प्राप्त किय। उन्होंने अलौकिक शक्तियों के सहारे सूर्यचंद्रविमलप्रभास बुद्ध के प्रति श्रद्धाभक्ति और कृतज्ञता की अभिव्यक्ति के रूप में और उनके पुण्डरीक सूत्र की देशना के लिए आकाश से फूलों और धूप की वर्षा कराया। बोधिसत्व सर्वसत्त्वप्रियदर्शन ने, हालाँकि, अपने शरीर के अधिकांश भाग को अर्पित अभी करने की कामना की थी, इसलिए उन्होंने सुगंधित तेलों का सेवन किया और उनसे शरीर को अभिषिक्त करने के उपरान्त, स्वयं को अग्नि के सुपूर्द कर दिया, जो बारह सौ वर्षों तक जलता रहा। उनके जलने की रोशनी ने समस्त लोक प्रकाशमान हो गया।

जब यह अर्पण पूरा हो गया, तब बोधिसत्व ने सूर्यचंद्रविमलप्रभास बुद्ध के पुण्य क्षेत्र में एक राजकुमार के रूप में पुनर्जन्म लिया। पैदा होते ही, उन्होंने बुद्ध को श्रद्धांजलि अर्पित किया। बुद्ध ने घोषणा की कि वे इस रात परिनिर्वाण में प्रवेश करेंगे, और राजकुमार को समस्त लोक में बुद्ध के धर्म का प्रचार प्रसार का भार सौप दिया। बुद्ध तब परिनिर्वाण में प्रवेश कर गये।

बोधिसत्व सर्वसत्त्वप्रियदर्शन रोते हुए, बुद्ध के शरीर का अंतिम संस्कार किया, अवशेष एकत्र किए, उसका चौरासी सहस्र बहुमूल्य कलश बनवाये, और पूरे क्षेत्र में चौरासी सहस्र स्तूपों का निर्माण करवाया। फिर भी उस भेंट से असंतुष्ट होकर उन्होंने अपनी भुजाएँ जला दीं, जो पूर्व से ही अपूर्व पूण्यों से प्रदीप्त दीख रही थीं। इस अग्नि के प्रकाश ने देखने वालों की आत्माओं को प्रदीप्त किया, लेकिन बहत्तर सहस्र वर्षों के उपरान्त भी लोगों ने यह देखकर दुःखी हुए कि उनके महानायक की दोनों भुजाएँ नहीं हैं

तब बोधिसत्व सर्वसत्त्वप्रियदर्शन ने घोषणा की कि यद्यपि उन्होंने अपनी भुजाओं को जला दिया है, उन्होंने आश्वस्त किया कि उनकी भुजाएँ पूर्ववत् हो जायेंगी। जैसे ही उन्होंने यह घोषणा की, उनकी भुजाएँ सहज ही प्रकट हो गयीं।

हम इस कहानी के पाठों के लिए दो प्रमुख बिंदुओं को संक्षेप में प्रस्तुत कर सकते हैं। पहला, आत्म-बलिदान से बड़ा मानवीय गुण नहीं है। दूसरा, देशना की ओर से हम सबसे बड़ा अर्पण वास्तव में अभ्यास कर सकते हैं।

पुण्डरीक सूत्र की प्रशंसा करते हुए और धर्म का प्रचार प्रसार करते हुए दस उपमायें

बोधिसत्व सर्वसत्त्वप्रियदर्शन की कहानी के बाद, हमारे पास तथाकथित 'पुण्डरीक सूत्र की प्रशंसा करते हुए दस उपमाएँ हैं', जो दर्शाता है कि पुण्डरीक सूत्र कितना अद्भुत है। इसके बाद, शाक्यमुनि विभिन्न गुणों की व्याख्या करते हैं जो पुण्डरीक सूत्र के प्रत्येक अभ्यासी को प्राप्त होता है।

इस तरह, शाक्यमुनि सबसे पहले हमारे मन चित्त को पुण्डरीक सूत्र के लिए खोलते हैं। फिर, वे दृढ़ता से घोषणा करते हैं कि धर्म के पतन के काल में यह ठीक है कि हमें पुण्डरीक सूत्र की देशना का प्रचार प्रसार करना चाहिए, कहा गया है कि 'मेरे परिनिर्वाण के उपरान्त अंतिम पाँच सौ वर्षों की अवधि में, जम्बुद्वीप में व्यापक प्रचार प्रसार करें,' जिससे कि यह कभी भूला नहीं दिया जाए। यह सुनिश्चित करें कि मार, मार के अनुयायी, स्वर्गीय प्राणी, नाग, यक्ष, कुंभण्ड और अन्य के पास इसे रोकने का कोई मौका नहीं रहे।

धर्म में पतन का काल निश्चित रूप से वर्तमान को इंगित करता है। हम जो धर्म के पतन के काल में रहते हैं, हमारे पास पुण्डरीक सूत्र के प्रचार प्रसार का एक महत्वपूर्ण मिशन है, जो सर्वोच्च और सबसे उदात्त देशना है। इस परिवर्त में शाक्यमुनि ने सीधे हमें इस मिशन को सौंपा है।

यह उस पाठ का हिंदी अनुवाद है जिसका जापानी मूल होक्के सानबुक्यो: काकु होन नो आरामासी तो योतेन (समेकित त्रिविध पुण्डरीकसूत्र: प्रत्येक परिवर्त का सारांश और मुख्य बिंदुएँ) में संस्थापक निक्क्यो निवानो के नाम प्रकाशित है, (कोसेइ प्रकाशन, 1991 [संशोधित संस्करण, 2016]), पीपी.199-203.

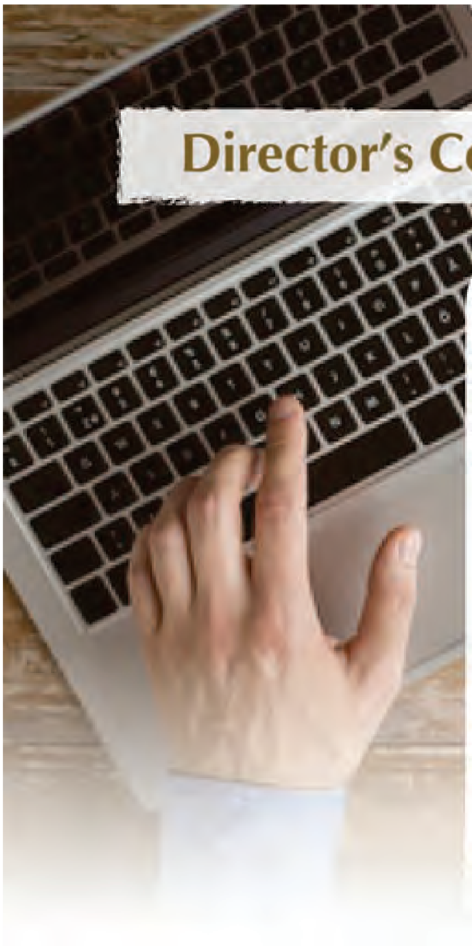

Director's Column

सब कुछ बुद्ध का संदेश हैं

रेवरेन्ट केइइची आकागावा
निदेशक, रिश्शो कोसेइ काइ इन्टरनेशनल

हम आमतौर पर “अलौकिक शक्तियों” को अलौकिक क्षमताओं के रूप में समझते हैं, जो हमें विभिन्न काल्पनिक लोकों में ले जाते हैं। अब जब हम एक डिजिटल सोसाइटी में रहते हैं और अक्सर जानकारियों की एक विशाल राशि के बीच खो जाते हैं, तो जीवन के अजूबों की सराहना करने के लिए आवश्यक संवेदनशीलता का होना मुश्किल लगता है क्योंकि हम अपनी दैनिक कार्यक्रम को नेविगेट करते होते हैं।

पुण्डरीक सूत्र के परिवर्त-16: “तथागत का शाश्वत जीवन” में बुद्ध ने समागम को संबोधित करते हुए कहा, “मैं हमेशा धर्म का पालन करता हूँ।” यह धर्म मार्ग हमें बताता है कि यह लोक बुद्ध के करुण संदेशों से भरी हुई है, जो सभी प्राणियों के जीवन को बढ़ाने की कामना रखते हैं। हमारा मन और हृदय इन संदेशों के ग्राही है।

यह कहना गलत नहीं होगा कि अलौकिक शक्तियाँ वे क्षमताएँ हैं, जिन्हें हम हासिल करते हैं, जब हम एक निस्वार्थ मन प्राप्त करते हैं, जो देवताओं और बुद्धों के दयालु मन के साथ एकीकृत है, और जो सभी जीवित प्राणियों की देखभाल करता है। जब हम अपने अहंकारी मन को छोड़ देते हैं और सच्चे मन से लोगों के करीब आते हैं, तो हम यह कहने में सक्षम हो जाते हैं कि दिव्य संरक्षण का एक अकल्पनीय क्षेत्र प्रकट होता है।

जैसा कि इस महीने के प्रेसिडेण्ट के संदेश में दर्शाया गया है, हममें से प्रत्येक व्यक्ति अपने अभ्यास के माध्यम से धर्म का पालन करने वाला बने। आइए हम एक ऐसे लोक का निर्माण करते रहें, जिसमें सभी लोग एक साथ सद्भाव से रह सकें। हमारी श्रद्धा भक्ति मन में जमी हुई होनी चाहिए, जो देवताओं और बुद्धों के मन के साथ गूँजती है।

We welcome comments on our newsletter Living the Lotus: living.the.lotus.rk-international@kosei-kai.or.jp

Rissho Kosei-kai: A Global Buddhist Movement

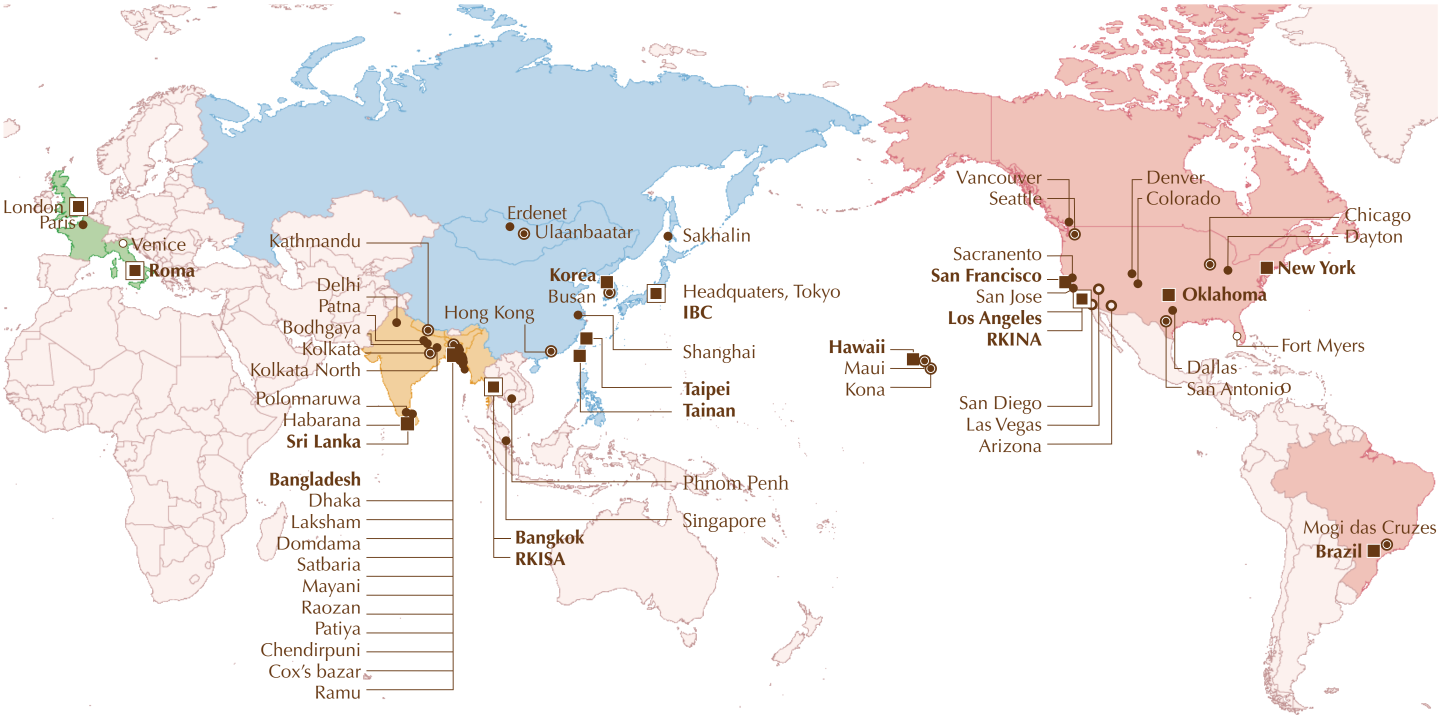

Rissho Kosei-kai Buddhist Church of Hawaii
2280 Auhuhu Street, Pearl City, HI 96782, USA
TEL: 1-808-455-3212FAX: 1-808-455-4633
Email: sangha@rkhawaii.org URL: http://www.rkhawaii.org

Rissho Kosei-kai Maui Dharma Center
1817 Nani Street, Wailuku, HI 96793, USA
TEL: 1-808-242-6175 FAX: 1-808-244-4625

Rissho Kosei-kai Kona Dharma Center
73-4592 Mamalahoa Highway, Kailua-Kona, HI 96740, USA
TEL: 1-808-325-0015 FAX: 1-808-333-5537

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Los Angeles
2707 East First Street, Los Angeles, CA 90033, USA
POBox 33636, CA 90033, USA
TEL: 1-323-269-4741 FAX: 1-323-269-4567
Email: rk-la@sbcglobal.net URL: http://www.rkina.org/losangeles.html

Please contact Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Los Angeles
Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Arizona
Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Colorado
Rissho Kosei-kai Buddhist Center of San Diego
Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Las Vegas
Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Dallas

Rissho Kosei-kai of San Francisco
1031 Valencia Way, Pacifica, CA 94044, USA
POBox 778, Pacifica, CA 94044, USA
TEL: 1-650-359-6951 Email: info@rksf.org URL: http://www.rksf.org

Please contact Rissho Kosei-kai of San Francisco
Rissho Kosei-kai of Sacramento
Rissho Kosei-kai of San Jose

Rissho Kosei-kai of New York
320 East 39th Street, New York, NY 10016, USA
TEL: 1-212-867-5677 Email: rkny39@gmail.com URL: http://rk-ny.org

Rissho Kosei-kai of Chicago
1 West Euclid Ave., Mt. Prospect, IL 60056, USA
TEL: 1-773-842-5654
Email: murakami4838@aol.com URL: http://rkchi.org

Rissho Kosei-kai of Fort Myers
URL: http://www.rkftmyersbuddhism.org

Rissho Kosei-kai Dharma Center of Oklahoma
2745 N.W. 40th St., Oklahoma City, OK 73112, USA
POBox 57138, Oklahoma City, OK 73157, USA
TEL: 1-405-943-5030 FAX: 1-405-943-5303
Email: rkokdc@gmail.com URL: http://www.rkok-dharmacenter.org

Rissho Kosei-kai Dharma Center of Denver
1255 Galapago St. #809 Denver, CO 80204, USA
TEL: 1-303-446-0792

Rissho Kosei-kai Dharma Center of Dayton
617 Kling Drive, Dayton, OH 45419, USA
URL: http://www.rkina-dayton.com

The Buddhist Center Rissho Kosei-kai International of North America (RKINA)
2707 East First St., Suite #1, Los Angeles, CA 90033, USA
TEL: 1-323-262-4430 FAX: 1-323-269-4567
Email: dharmasa@rksabuddhistcenter.org
URL: http://rksabuddhistcenter.org

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of San Antonio
(Address) 6083 Babcock Road, San Antonio, TX 78240, USA
(Mail) POBox 692148, San Antonio, TX 78249, USA
TEL: 1-210-558-4430 FAX: 1-210-696-7745
Email: dharmasanantonio@gmail.com
URL: http://www.rkina.org/sanantonio.html

Rissho Kosei-kai of Seattle's Buddhist Learning Center
28621 Pacific Highway South, Federal Way, WA 98003, USA
TEL: 1-253-945-0024 Email: rkseattlewashington@gmail.com
URL: http://buddhistlearningcenter.org

Rissho Kosei-kai of Vancouver
Please contact RKINA

Risho Kossei-kai do Brasil
Rua Dr. José Estefno 40, Vila Mariana, São Paulo-SP, CEP 04116-060, Brasil
TEL: 55-11-5549-4446, 55-11-5573-8377
Email: risho@rkk.org.br URL: http://www.rkk.org.br

Risho Kossei-kai de Mogi das Cruzes
Av. Ipiranga 1575-Ap 1, Mogi das Cruzes-SP, CEP 08730-000, Brasil

在家佛教韓国立正佼成会
〒 04420 大韓民国 SEOUL 特別市龍山區漢南大路 8 路 6-3
6-3, 8 gil Hannamdaero Yongsan gu, Seoul, 04420, Republic of Korea
TEL: 82-2-796-5571 FAX: 82-2-796-1696

在家佛教韓国立正佼成会釜山支部
〒 48460 大韓民国釜山廣域市南區水營路 174, 3F
3F, 174 Suyoung ro, Nam gu, Busan, 48460, Republic of Korea
TEL: 82-51-643-5571 FAX: 82-51-643-5572

社團法人在家佛教立正佼成會
台湾台北市中正區衡陽路 10 號富群資訊大厦 4 樓
4F, No. 10, Hengyang Road, Jhongjheng District, Taipei City 100, Taiwan
TEL: 886-2-2381-1632, 886-2-2381-1633 FAX: 886-2-2331-3433

台南市在家佛教立正佼成會
台湾台南市崇明 23 街 45 號
No. 45, Chongming 23rd Street, East District, Tainan City 701, Taiwan
TEL: 886-6-289-1478 FAX: 886-6-289-1488
Email: koseikaitainan@gmail.com

Rissho Kosei-kai South Asia Division
Thai Rissho Friendship Foundation
201 Soi 15/1, Praram 9 Road, Bangkapi, Huaykhwang, Bangkok 10310, Thailand
TEL: 66-2-716-8141 FAX: 66-2-716-8218

Rissho Kosei-kai of Kathmandu
Ward No. 3, Jhamsikhel, Sanepa-1, Lalitpur, Kathmandu, Nepal

Rissho Kosei-kai of Kolkata
E-243 B. P. Township, P. O. Panchasayar, Kolkata 700094, India

Rissho Kosei-kai of Kolkata North
AE/D/12 Arjunpur East, Teghoria, Kolkata 700059,
West Bengal, India

Rissho Kosei-kai of Bodhgaya Dharma Center
Ambedkar Nagar, West Police Line Road, Rumpur, Gaya-823001,
Bihar, India

Rissho Kosei-kai of Patna Dharma Center
Please contact Rissho Kosei-kai of Kolkata

Rissho Kosei-kai of Central Delhi
77 Basement D.D.A. Site No. 1, New Rajinder Nagar,
New Delhi 110060, India

Rissho Kosei-kai of Singapore
Please contact Rissho Kosei-kai International

Rissho Kosei-kai of Phnom Penh
W.C. 73, Toul Sampaov Village, Sangkat Toul Sangke, Khan Reouseykeo,
Phnom Penh, Cambodia

RKISA Rissho Kosei-kai International of South Asia
Thai Rissho Friendship Foundation
201 Soi 15/1, Praram 9 Road, Bangkapi, Huaykhwang, Bangkok 10310, Thailand
TEL: 66-2-716-8141 FAX: 66-2-716-8218

Rissho Kosei-kai of Bangkok
Thai Rissho Friendship Foundation
201 Soi 15/1, Praram 9 Road, Bangkapi, Huaykhwang, Bangkok 10310, Thailand
TEL: 66-2-716-8216 FAX: 66-2-716-8218 Email: info.thairissho@gmail.com

Rissho Kosei Dhamma Foundation
No. 628-A, Station Road, Hunupitiya, Wattala, Sri Lanka
TEL: 94-11-2982406 FAX: 94-11-2982405

Rissho Kosei-kai of Polonnaruwa
Please contact RiKISA

Rissho Kosei-kai Bangladesh
85/A Chanmari Road, Lalkhan Bazar, Chittagong, Bangladesh
TEL/FAX: 880-31-626575

Rissho Kosei-kai Mayani
Mayani Barua Para, Mirsarai, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai Damdama
Damdama Barua Para, Mirsarai, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai Satbaria
Village: Satbaria Bepari Para, Chandanaih, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai Chendhirpuni,
Village: Chendhirpuni, P.O.: Adhunogar, P.S.: Lohagara, Chittagong,
Bangladesh

Rissho Kosei-kai Raozan
Dakkhin Para, Ramzan Ali Hat, Raozan, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai Laksham
Village: Dhupchor, Laksham, Comilla, Bangladesh

Rissho Kosei-kai Dhaka
408/8 DOSH, Road No 7 (West), Baridhara, Dhaka, Bangladesh

Rissho Kosei-kai Cox's Bazar
Ume Burmize Market, Tekpara, Sadar, Cox's Bazar, Bangladesh

Please contact Rissho Kosei-kai Bangladesh
Rissho Kosei-kai Patiya
Rissho Kosei-kai Ramu
Rissho Kosei-kai Aburkhiln

Buddiyskiy khram "Lotos"
4 Gruzinski Alley, Yuzhno-Sakhalinsk 693005, Russia
TEL: 7-4242-77-05-14

Rissho Kosei-kai of Hong Kong
Flat D, 5/F, Kiu Hing Mansion, 14 King's Road, North Point, Hong Kong, China

Rissho Kosei-kai Friends in Shanghai

Rissho Kosei-kai of Ulaanbaatar
(Address) 15F Express Tower, Peace avenue, khoroo-1, Chingeltei district,
Ulaanbaatar 15160, Mongolia
(Mail) POBox 1364, Ulaanbaatar-15160, Mongolia
TEL: 976-70006960 Email: rkkmongolia@yahoo.co.jp

Rissho Kosei-kai of Erdenet
Please contact Rissho Kosei-kai International

Rissho Kosei-kai di Roma
Via Torino, 29, 00184 Roma, Italia
TEL/FAX: 39-06-48913949 Email: roma@rk-euro.org

Please contact Rissho Kosei-kai di Rome
Rissho Kosei-kai of Paris
Rissho Kosei-kai of Venezia

Rissho Kosei-kai of the UK
29 Ashbourne Road, London W5 3ED, UK
TEL: 44-20-8933-3247 Email: info@rkuk.org URL: https://www.rkuk.org
Facebook: https://www.facebook.com/RKUnitedKingdom
Twitter: https://twitter.com/rkuk_official
Instagram: https://www.instagram.com/rkuk_official

Rissho Kosei-kai International Buddhist Congregation (IBC)
166-8537 東京都杉並区和田 2-7-1 普門メディアセンター 3F
Fumon Media Center 3F, 2-7-1 Wada, Suginami-ku, Tokyo 166-8537, Japan
TEL: 03-5341-1230 FAX: 03-5341-1224 URL: http://www.ibc-rk.org

Published by Rissho Kosei-kai International